ISSN 2350-2770

इतिहास दिवाकर

त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

वर्ष १२ अंक १ चैत्र मास कलियुगाब्द ५१२१ अप्रैल २०१९

जलियांवाला बाग स्मारक

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी
गांव व डाकघर नेरी, जिला हमीरपुर-177001 (हि० प्र०)

ISSN 2250-2769

इतिहास दिवाकर

त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

वर्ष १२ अंक १ चैत्र मास कलियुगाब्द ५१२१ अप्रैल २०१९

मार्गदर्शक :
डॉ० शिवाजी सिंह
इरविन खन्ना
चेतराम गर्ग

सम्पादक :
डॉ. राकेश कुमार शर्मा

सह सम्पादक
डॉ. विवेक शर्मा

व्यवस्थापक
प्यार चन्द परमार

सम्पादन सहयोग :
डॉ० रमेश शर्मा
डॉ० ओम प्रकाश शर्मा

टंकण एवं सज्जा :
रवि ठाकुर

सम्पादकीय कार्यालय :
ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान,
नेरी, गांव व डाकघर - नेरी
जिला-हमीरपुर-१७७००१(हि०प्र०)
दूरभाष : ०६४१८४-८५४१५

मूल्य:
प्रति अंक - १५.०० रुपये
वार्षिक - ६०.०० रुपये
itihasdivakar@yahoo.com
chetramneri@gmail.com

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

पर्व विशेष
नवसंवत - शास्त्रीय दृष्टि एवं लोक परम्परा - डॉ. ओम दत्त सरोच ३

संवीक्षण
जलियांवाला बाग का नरसंहार और उसका परिणाम - प्रो. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री ७
मार्तण्ड-कश्मीर के सूर्य मन्दिर का पुरातात्त्विक अध्ययन - डॉ. सतीश गंजू, - वनीता रानी १६
ममेल शिव मन्दिर का पुरातात्त्विक अध्ययन - डॉ. भाग चन्द चौहान २४

व्यक्तित्व विशेष
पद्मश्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर - कृष्णानन्द सागर २७

यात्रा वृत्तान्त
ब्रह्मपुत्र के किनारे कामाख्या देवी सानिध्य में इतिहास चिन्तन - डॉ. सूरत ठाकुर ३३

ध्येय पथ
राष्ट्रीय परिसंवाद - पश्चिमी हिमालय में पुरातात्त्विक अन्वेषण - डॉ. अंकुश भारद्वाज ४२
गतिविधियां - प्यार चन्द परमार ४७

ममेल शिव मन्दिर का पुरातात्त्विक अध्ययन

डॉ. भाग चन्द चौहान

ममलेश्वर महादेव मन्दिर करसोग घाटी जोकि स्वतन्त्रता से पहले सुकेत रियासत का क्षेत्र था और वर्तमान में तहसील करसोग, जिला मंडी के ममेल (करसोग) नामक स्थान में स्थित है। इस क्षेत्र और मन्दिर का इतिहास अति प्राचीन माना जाता है। इसका इतिहास लोक-कथाओं, लोक-गाथाओं एवं स्थानीय समाचार पत्र-पत्रिकाओं तथा स्मारिकाओं में ही मिलता है। इतिहासकारों द्वारा पुरातात्त्विक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से तथ्यों के आधार पर मन्दिर, स्थान एवं निर्माण का प्रमाणिक इतिहास लिखने की आवश्यकता है। जबकि इस पौराणिक मन्दिर का विज्ञान संवत साक्ष्य-परक इतिहास लेखन करने के लिए मन्दिर परिसर में उपलब्ध पुरातात्त्विक अवशेष तथा आस-पास के क्षेत्रों में स्थित सम्बन्धित मन्दिरों की शैली एवं स्थानों से प्राप्त अन्य पुरातात्त्विक वस्तुएं अध्ययन के लिए उपलब्ध हैं।

ममेल शिव मन्दिर परिसर में कुछ दशक पूर्व हुई खुदाई से प्राप्त महत्वपूर्ण पुरातात्त्विक अवशेषों की बनावट के आधार पर उनके निर्माण काल-खण्ड का अध्ययन राज्य कला, भाषा एवं संस्कृति विभाग ने तो किया है, परन्तु इस अध्ययन में यहां की सभी मूर्तियों नहीं ली गई है। इसका कारण क्या रहा, इसकी जानकारी स्थानीय कारदारों के पास भी नहीं है। प्रस्तुत शोध पत्र खुदाई से प्राप्त हुई सामग्री पर आधारित है। परिसर की कई मूर्तियां एवं मन्दिर से जुड़े बहुत ऐसे अवशेष पाए गए हैं। मन्दिर परिसर में बहुत सारी मूर्तियां और अन्य अवशेष बिखरे पड़े है, जिन्हें शैली के अनुसार मुख्यतः तीन प्रकार में बांटा जा सकता है। जिसमें पहला दक्षिणी शैली, दूसरा गंधार शैली और तीसरा मध्यकालीन या आधुनिक शैली का प्रकार माना जा सकता है।

गांधार शैली की मूर्तियां

तीसरा प्रकार मन्दिर के गर्भ गृह में स्थित अष्ट-धातु की मूर्ति है, जिसमें शिव, पार्वती को गणेश एवं कार्तिकेय सहित पूरे शिव-परिवार को दर्शाया गया है। इस प्रकार का पूर्ण शिव-परिवार प्रदर्शन जिसमें श्री कार्तिकेय जी भी